ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 मार्च 2018
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-९८, वर्ष-११
चैत्र मास, विक्रमी २०७५ (मार्च 2018)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो नि केतुना विश्वं समत्रिणं दह। कृधी न ऊर्ध्वांञ्चरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः॥ –ऋ० १। ३। १०। ४॥

व्याख्यान– हे सर्वोपरि विराजमान परब्रह्मन्! आप (ऊर्ध्वः) सबसे उत्कृष्ट हो, हमको कृपा से उत्कृष्ट गुणवाले करो, तथा ऊर्ध्व देश में हमारी रक्षा करो। हे सर्वपापप्रणाशकेश्वर! हमको (केतुना) विज्ञान अर्थात् विविध विद्यादान देके (अंहसः) अविद्यादि महापाप से (निपाहि) नितरां पाहि–सदैव अलग रक्खो। तथा (विश्वम्) इस सकल संसार का भी नित्य पालन करो। हे सत्यमित्र न्यायकारिन्! जो कोई प्राणी (अत्रिणम्) हम से शत्रुता करता है उसको, और कामक्रोधादि शत्रुओं को आप (संदह) सम्यक् भस्मीभूत करो (अच्छे प्रकार जलाओ) (कृधी न ऊर्ध्वान्) हे कृपानिधे! हमको विद्या, शौर्य, धैर्य, बल, पराक्रम, चातुर्य, विविध, धन, ऐश्वर्य, विनय, साम्राज्य, सम्मति, सम्प्रीति, स्वेदशसुख–संम्पादनादि गुणों में सब नरदेहधारियों से अधिक उत्तम करो। तथा (चरथाय जीवसे) सबसे अधिक आनन्दभोग, सब देशों में अव्याहतगमन (इच्छानुकूल जाना–आना) आरोग्यदेह, शुद्ध मानस–बल और विज्ञान इत्यादि के लिए हमको उत्तमता और अपनी पालनायुक्त करो। (विदाः) विद्यादि उत्तमोत्तम धन (देवेषु) विद्वानों के बीच में प्राप्त करो। अर्थात् विद्वानों के मध्य में भी उत्तम प्रतिष्ठायुक्त सदैव हमको रक्खो॥

सम्पादकीय

हम कहाँ जा रहे हैं?

मनुष्यमात्र अपने जीवन में समाज में, राष्ट्र में घटित घटनाओं से प्रभावित होता है, इतना ही नहीं अपितु प्रत्येक घटना से कुछ न कुछ सीखता भी है, कुछ घटनाओं से हम सीखने का पूर्ण प्रयास करते हैं, तब कुछ–कुछ सीखने में आता है, कुछ घटनाओं को हम समझते हुए भी उनसे सीखना नहीं चाहते तब भी वे घटनाक्रम किसी न किसी रूप में इन्द्रियों के माध्यम से चित्त पर अंकित हो ही जाते हैं और समय आने पर अपना अनुकूल अथवा प्रतिकूल प्रभाव अवश्य दिखाते हैं। हमारे ऋषि–मुनि–आचार्य–विद्वानों ने उसी मनोविज्ञान को समझकर व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र में उत्तम जीवन चरित्रों को सदैव उभारकार उनके जीवनवृत्तों को महिमामण्डित किया, जिससे सामान्य मानव में भी यदा–कदा उच्चता के भाव, उच्चता के संस्कार बने रहे, जिससे पतन से बचते हुए वे अपना जीवनयापन कर सके।

पतनोन्मुख प्रवृत्ति तो मानव मात्र को आकृष्ट करती ही रहती है, हमारे भीतर निरन्तर वृत्तियों का द्वन्द्व तो चलता ही रहता है, कुछ व्यक्ति अपने ज्ञान से, कुछ व्यक्ति पारिवारिक पृष्ठभूमि से, कुछ व्यक्ति सामाजिक परम्पराओं, सामाजिक नियमों–मर्यादाओं से अपनी–अपनी हीनवृत्तियों को दबाकर, तिरस्कृत करते हुए उच्चता को प्राप्त कर ले जाते हैं और जो कुछ पल के लिए भी हीनवृत्ति के शिकार हुए कि जीवनभर अर्जित किये हुए समस्त उदात्त मूल्य छिन्न–भिन्न होकर धाराशायी हो जाते हैं। मानव स्वयमेव नहीं बनता, मानव को बनाना पड़ता है, तभी तो प्राचीनकाल से ही माता–पिता,आचार्य, राजा (नेता) इन सबकी भूमिका निश्चित की गयी थी, जिससे मानव निर्माण के उपक्रम यथावत् रहें। वर्त्तमान में इनके अतिरिक्त भी कारण विश्वभर में उभरकर आये हैं, जो मानव के बनाने बिगाड़ने में अपना प्रत्यक्ष योगदान दे रहे है, ऐसे कारणों पर वर्त्तमान में माता–पिता, आचार्य, अतिथि और राजा (सरकार) किसी का कोई नियन्त्रण नहीं है। ऐसा सबसे प्रमुख कारण मीडिया (जनसंचार माध्यम), मीडिया में भी इलेक्ट्रानिक मीडिया सर्वथा प्रभावकारी सिद्ध हो रही हैं। ठीक है कि समाज में इसकी कुछ विश्वासनीयता घटी है, पुनरपि यह अभी भी प्रभावकारी है और कोई भी कारक अनियन्त्रित होकर जब कार्य करता है तब पौराणिक आख्यानों में से एक ही खलनायक स्मरण आता है, जिसे "भस्मासुर" कहते हैं, यह भस्मासुरीवृत्ति किसी के भी हित में नहीं होती। कब किसको भस्म कर जाय, कुछ भी विश्वास नहीं होता अपितु कब स्वयमेव भस्म हो जाय यह भी कह पाना सम्भव नहीं। इसीलिए सभी कारकों पर तन्त्र (व्यवस्था) का नियन्त्रण होना ही चाहिए। किन्तु दुर्भाग्य यह है कि यदि वह तन्त्र भी विवेकहीन हो तो

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

कैसे व्यक्ति बनेंगे? कैसा समाज बनेगा? और कैसा राष्ट्र बनेगा?

पाठकगणों! वर्त्तमान में हमारे इस देश में कुछ प्रकार की घटना घटी जो हमारी, हमारे समाज की दिशा सूचक लगती है। और प्रश्न उठ खड़ा होता है कि- "हम कहाँ जा रहे हैं"?

घटनाक्रम के अनुसार जैसा कि आप सभी को विदित ही हो चुका होगा- चलचित्र (सिनेमा) क्षेत्र की एक स्वनामधन्य नटी श्रीदेवी का दुर्घटनावशात् निधन हो गया। यदि हम इसमें यह भी न देखें कि उनकी मृत्यु मदिरा (शराब) के अत्याधिक सेवन से बाथटब में डूबकर हुई, तब भी क्या एक नटी देश के लिए इतनी महत्वपूर्ण हो गयी कि- स्वतन्त्रता के आन्दोलन में बलिदान कर गये क्रान्तिकारी **"चन्द्रशेखर आजाद"** का बलिदान दिवस कहीं समाचारों में जगह ही न बना सका। इतना ही नहीं देश में अन्य कोई घटना जैसे लगभग पाँच दिन तक घटी ही नहीं, न आंतकवादी हमला, न किसी सैनिक-सुरक्षाकर्मी की मृत्यु (जबकि हुई थी)। बस प्रातः से रात्रि पर्यन्त और रात्रि से प्रातःकाल तक एक ही घटना का विवरण था, विस्तार से था, किन्तु घटना का क्रम नटी के भूतकाल का अश्लील नृत्य ही अधिक था। किन्तु इतने से ही हमारे नेताओं को सन्तुष्टि नहीं हुई, तब ये सरकार मीडिया से सैकड़ों कदम आगे जाकर उस नटी का अन्तिम संस्कार "राष्ट्रीय ध्वज" में लपेटकर कर आयी। सैनिकों ने नटी के शव को सैल्यूट किया। प्रश्न उठता है- क्या ये सेना में थी? सरकार में थी? प्रशासनिक अधिकारी थी? या कोई समाज-राष्ट्र की उन्नत्ति में योगदान देने वाली समाजसेविका थी? आखिर तिरंगा झण्डा किन-किन के लिए अन्तिमवस्त्र बन जाता है? किनके लिए बनना चाहिए? क्या कोई आचार संहिता है अथवा नहीं? या मेरी सरकार, मेरी मर्जी! इस कृत्य से हमारी भावी पीढ़ी का झुकाव किस ओर होगा? क्या प्रभाव पडेगा उन नवकोमल हृदयामुक्त छोटी-छोटी बालिकाओं पर? क्या प्रभाव पडेगा राष्ट्रहित बलिदान होने पर गर्व करने वाले सैनिक परिवारों पर? यही कि- जीवनभर नाचो, गावो व अपने शरीरिक सौन्दर्य का प्रदर्शन करो, नशा करो और दुर्घटना में मर भी गये तब भी "राष्ट्रीय सम्मान" मुफ्त का?

विचारिए बुद्धिशील! प्रगतिशील बन्धुओं! दूसरी ओर सभी शंकराचार्यों में से एकमात्र परोपकार प्रिय शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज का भी देहान्त हुआ, उन्होंने मूल वेदाध्ययन के अनेक केन्द्र खोले, अनेक अभावग्रस्त क्षेत्रों में चिकित्सायल खुलवाये, पूर्वोत्तर के राज्यों में, कश्मीर घाटी में भी अपनी सामर्थ्यानुसार कार्य किये, अपनी मान्यताओं के अनुसार सुधार के प्रयत्न किये। किन्तु उनका न राजकीय सम्मान हुआ, न जीवनवृत्त सुनाया, न उनके कार्यों का ही कोई विवरण प्रकाशित हुआ और संयोग कि दोनों ही तमिलनाडु के थे। लेकिन...? प्रश्न फिर सामने है- हम कहाँ जा रहे हैं?

विचारिए! चिन्तन कीजिए! उत्तर है- यदि आर्य निर्माण न हुआ, आर्यकरण न हुआ, समाज आर्यसमाज न बन पाया और राष्ट्र आर्यावर्त्त न बन पाया तो यही होगा, इससे भी भयानक होगा। हमारी कल्पनाओं से भी अधिक होगा और होगा मात्र- **"पतन"**।

घटनाक्रम यदि सिखा रहा है, दिखा रहा है, समझ आये तो सीख लीजिए! वरना भावी पीढ़ी तो सीखेगी! अतः **"आर्य निर्माण-राष्ट्र निर्माण"**

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के विद्यालय में प्रशिक्षण कार्यक्रम के उपरान्त सभाध्यक्ष आचार्य राजेश जी का स्वागत करते विद्यालय के अधिकारीगण

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	17 मार्च	दिन-शनिवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसंत	नक्षत्र-पुर्वाभाद्रपदा
पूर्णिमा	31 मार्च	दिन-शनिवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसंत	नक्षत्र-उ॰ फाल्गुनी
अमावस्या	16 अप्रैल	दिन-सोमवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-अश्विनी
पूर्णिमा	30 अप्रैल	दिन-सोमवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-स्वाती

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की देन

मैं आर्य संदीप चहल वर्तमान में स्वामी देवी दयाल महाविद्यालय के सिविल विभाग में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हूँ। तथा वर्त्तमान में राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा जनपद पंचकुला का सचिव हूँ और आर्यों के साथ मिलकर आर्य निर्माण में सहयोग कर रहा हूँ। मेरा जन्म पौराणिक आर्य (केवल मूर्ति पूजा को न मानने वाले) परिवार में हुआ। माता जी कभी-कभी छिप-छिपाकर धूप-दीया आदि करती थी व कभी-कभी हमसे भी करवाती थी। पिता जी इन पाखण्डों के खिलाफ थे क्योंकि वे मेरे परदादा जो कि आर्य समाजी थे, से प्रभावित थे। आधी-अधूरी जानकारी के अभाव में हम भी गुरु-घंटालों के चक्कर में फंस गये। सन् 1995 में जब नरवाना क्षेत्र में बाढ़ आई तब हमारे गाँव में धन-धन सतगुरु वाले झुठे सौदे का व्यापार हुआ। उस व्यापार के चक्कर में मैं भी आ गया और बचपन में ही नामधारी बनकर रट्टू तोतों की तरह नाम जपने लगा। डिजीटल बाबा की चका-चौंध में आकर हम भी ईन्सा लिखने लगे व लगभग 2-3 साल ईन्सा लिखा। डेरे में जाने का सिलसिला लगभग 20 साल तक चला। लेकिन तब मैं जनवरी 2015 में डेरे में गया तो वहां अलग ही परम्परा चल पड़ी थी जो कि परमार्थ के नाम पर जबरदस्ती वसूली थी। सभी डेरा के आधीन स्कूल-कॉलेजों (विद्यालयों व महाविद्यालयों) में बच्चों से चंदे की उगाही की जा रही थी। जब मैंने अपने मित्रों से इस बारे में चर्चा की तो उन्होंने मेरा विरोध किया, तो मेरा इस झूठे सौदे से मन-भर गया। इसमें साथ-साथ बलात्कारी बाबा कितनों के माध्यम से अपनी औकात पर आ गया था। जो हमें स्वीकार नहीं था। इस वजह से मैंने डेरा जाना छोड़ दिया। इसी दौरान मैं अमृतसर आदि स्थलों पर जाने लगा और सिखीपंथ की ओर झुकाव हो गया। इसी बीच मेरे भतीजे-भतीजी हुए, जिनका नामकरण संस्कार मैंने सिखों की तरज पर रखा। 2-3 साल से मेरे ही गांव के रनवीर व अजय आर्य सत्र के लिए प्रेरित करते रहे पर मैंने उनको कई बार टाल दिया। समय-समय पर कई बार सत्रों की चर्चा सुनी पर जाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।

एक दिन रविवार के लिए कहता तो सत्र के नियमानुसार आज्ञा नहीं मिली। जनवरी 2016 में सरपंच के चुनाव शराबबन्दी, जातिवाद व भाई-भतीजावाद के खिलाफ लड़ा पर बुरी तरह हार गया, पर दिल से हार नहीं मानी और आगे विद्या की तलाश में लग गया। 5-6 महिनों के प्रयास के बाद आर्य राजेश आर्यावर्त जी ने कई बार कनाडा से सत्र की जानकारी दी तो मुझे लगा कि कुछ तो बात है कि इननी दूर से बार-बार सूचना आ रही है। इसी बीच एक-दो बार आचार्य अशोकपाल जी से सम्पर्क हुआ व आर्य समर, आर्य अजय फरैण , आर्य राजेश आर्यावर्त कनाडा व आचार्य अशोकपाल जी के प्रयास से 10-11 दिसम्बर 2016 को जाट भवन सेक्टर 6 पंचकुला में सत्र में आने का अवसर प्राप्त हुआ। पहले दिन आचार्य हनुमत् प्रसाद उपाध्याय जी व दूसरे दिन आचार्य अशोकपाल जी ने मेरे सभी प्रश्नों का उत्तर देकर मेरी सभी भ्रान्तियां दूर कर दी। धर्म-सत्र में मेरा मत जानकर धन-धन की ऐसी व्याख्या की कि मेरे मन से सारा भ्रम दूर हो गया। उसी दिन से मैंने सारा जीवन आचार्यों व आर्यों के पुरुषार्थ से खड़ी पवित्र संस्था राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के लिए कार्य करने का मन बना लिया।

01-01-2017 को मेरा विवाह भी वैदिक रीति से शराब मुक्त व दहेज मुक्त हुआ। पिछले लगभग डेढ़ साल में लगभग 20-25 सत्रों में सैंकड़ों युवकों पर प्रयास व पुरुषार्थ करके आर्यकरण में सहयोग कर रहा हूँ। मेरी धर्मपत्नी ऋतुरानी व पूरा परिवार भी पूर्णत: सहयोग कर रहा है। नियमित स्वाध्यायशील हूँ व आर्ष साहित्य को पढ़ता रहता हूँ। ओरों से भी मैं निवेदन करता हूँ कि स्वाध्यायशील बनें। परमात्मा से कामना करता हूँ कि पवित्र भाव से विद्या के क्षेत्र में काम कर रहे राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सभी आचार्यों व आर्यों को दीर्घायु दे व हम भी इस योग्य बन सकें कि हजारों-लाखों का आर्यकरण करने में सक्षम हो सके। ताकि हम शीघ्रातिशीघ्र इस विश्व का आर्यकरण कर देंवे। सत्यमेव जयते!

– आर्य संदीप चहल, गांव फरैण, नवाना,जीन्द, हरियाणा

2 मार्च-31 मार्च 2018 चैत्र ऋतु- वसन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसंवत्सर प्रारम्भ आर्य समाज स्थापना दिवस 18 मार्च		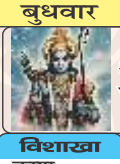	श्रीरामचन्द्र जयन्ती चैत्र शुक्ल नवमी 25 मार्च	पुर्वफाल्गुनी शुक्ल पूर्णिमा/प्रतिपदा 2 मार्च	उ० फाल्गुनी कृष्ण द्वितीया 3 मार्च	हस्त कृष्ण तृतीया 4 मार्च
चित्रा कृष्ण चतुर्थी 5 मार्च	स्वाती कृष्ण पंचमी 6 मार्च	विशाखा कृष्ण षष्ठी 7 मार्च	अनुराधा कृष्ण सप्तमी 8 मार्च	ज्येष्ठा कृष्ण अष्टमी 9 मार्च	मूल कृष्ण नवमी 10 मार्च	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण नवमी 11 मार्च
पूर्वाषाढ़ा कृष्ण दशमी 12 मार्च	उत्तराषाढ़ा कृष्ण एकादशी 13 मार्च	श्रवण कृष्ण द्वादशी 14 मार्च	धनिष्ठा कृष्ण त्रयोदशी 15 मार्च	शतभिषा कृष्ण चतुर्दशी 16 मार्च	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण अमावस्या 17 मार्च	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल प्रतिपदा 18 मार्च
रेवती शुक्ल द्वितीया 19 मार्च	अश्विनी शुक्ल तृतीया 20 मार्च	भरणी शुक्ल चतुर्थी 21 मार्च	कृतिका शुक्ल पंचमी 22 मार्च	रोहिणी शुक्ल षष्ठी 23 मार्च	मृगशिरा शुक्ल सप्तमी 24 मार्च	आर्द्रा शुक्ल अष्टमी/नवमी 25 मार्च
पुनर्वसु शुक्ल दशमी 26 मार्च	पुष्य शुक्ल एकादशी 27 मार्च	आश्लेषा शुक्ल द्वादशी 28 मार्च	मघा शुक्ल त्रयोदशी 29 मार्च	पू० फाल्गुनी शुक्ल चतुर्दशी 30 मार्च	उ० फाल्गुनी शुक्ल पूर्णिमा 31 मार्च	23 मार्च शहीदी दिवस

01 अप्रैल-30 अप्रैल 2018 वैशाख ऋतु- ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
स्वाती शुक्ल पूर्णिमा 30 अप्रैल	स्वाती	स्वाती	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	चित्रा कृष्ण प्रतिपदा 1 अप्रैल
स्वाती कृष्ण द्वितीया 2 अप्रैल	स्वाती कृष्ण तृतीया 3 अप्रैल	विशाखा कृष्ण चतुर्थी 4 अप्रैल	अनुराधा कृष्ण पंचमी 5 अप्रैल	ज्येष्ठा कृष्ण षष्ठी 6 अप्रैल	मूल कृष्ण सप्तमी 7 अप्रैल	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण अष्टमी 8 अप्रैल
उत्तराषाढ़ा कृष्ण नवमी 9 अप्रैल	श्रवण कृष्ण दशमी 10 अप्रैल	धनिष्ठा कृष्ण दशमी 11 अप्रैल	शतभिषा शुक्ल एकादशी 12 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल द्वादशी 13 अप्रैल	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल त्रयोदशी 14 अप्रैल	रेवती शुक्ल चतुर्दशी 15 अप्रैल
अश्विनी कृष्ण अमावस्या/प्रतिपदा 16 अप्रैल	भरणी शुक्ल द्वितीया 17 अप्रैल	कृतिका शुक्ल तृतीया 18 अप्रैल	रोहिणी शुक्ल चतुर्थी 19 अप्रैल	मृगशिरा शुक्ल पंचमी 20 अप्रैल	आर्द्रा शुक्ल षष्ठी 21 अप्रैल	पुनर्वसु शुक्ल सप्तमी 22 अप्रैल
पुष्य शुक्ल अष्टमी 23 अप्रैल	आश्लेषा शुक्ल नवमी 24 अप्रैल	मघा शुक्ल दशमी 25 अप्रैल	पू० फाल्गुनी शुक्ल एकादशी 26 अप्रैल	उ० फाल्गुनी शुक्ल द्वादशी 27 अप्रैल	हस्त शुक्ल त्रयोदशी 28 अप्रैल	चित्रा शुक्ल चतुर्दशी 29 अप्रैल

संध्या काल

माघ चैत्र, वसंत ऋतु, कलि-5118-19, वि. 2074-75
(2 मार्च 2018 से 31 मार्च 2018)
प्रात: काल: 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

वैशाख मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(1 अप्रैल 2018 से 30 अप्रैल 2018)
प्रात: काल: 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

आर्यसमाज का कर्त्तव्य

-आचार्य वेद प्रकाश

"**आर्यसमाज**" यह नाम सुनते ही एक ऐसा भवन याद आता है जिस भवन में साप्ताहिक रूप से प्रत्येक रविवार को अग्निहोत्र व सत्संग होता है। सप्ताह के 168 घण्टों में दो घण्टे का कार्यक्रम और कहीं-कहीं तो एक ही घण्टे का कार्यक्रम होता है। किसी-किसी आर्यसमाज भवन में हवन का कार्यक्रम साप्ताहिक रूप से न होकर दैनिक रूप से होते हैं, तब भी यदि प्रतिदिन का एक घण्टा भी हवन में मान लें तो 7 घण्टे हवन के व एक घण्टे का सत्संग अर्थात् सप्ताह के 168 घण्टे में 7+1=8 घण्टे की कार्यवाही। यदि उस आर्यसमाज में कोई सेवक पुरोहित नहीं रहता तो समझ लीजिए 168 घण्टे के सप्ताह में 160 घण्टे से ज्यादा ताला लटका रहता है और कुछ समाज तो ऐसे हैं कि जहाँ वार्षिकोत्सव के समय ही ताला खुलता है। कुछ एक आर्यसमाज ऐसे भी हैं जहाँ के प्रधान व मंत्री सामाजिक रूप से सक्रिय होते हैं वहाँ पर कम्प्यूटर की नि:शुल्क कक्षा, सिलाई-कढ़ाई सिखाने की व्यवस्था भी कर दी जाती है। कभी-कभी नि:शुल्क चिकित्सकों की व्यवस्था भी होती है।

क्या यही होना चाहिए था आर्यसमाज का स्वरूप? 1875 में आर्यसमाज की स्थापना करते समय क्या ऋषि दयानन्द ने मन:- मस्तिष्क में ऐसे ही आर्यसमाज की कल्पना की थी? क्या आर्यसमाज का दायित्व हवन व सत्संग कर करा कर पूरा हो जाता है?

नहीं! जी नहीं, आर्य समाज का अर्थ है एक ऐसा संगठन जिसका उद्देश्य ही था संसार का उपकार करना। ऋषि ने आर्यसमाज की स्थपना की व आर्यसमाज के नियम निर्धारित करते समय छँटवा नियम बताते हैं और कहते हैं "**संसार का उपकार करना इस समाज का प्रमुख उद्देश्य है**"। क्या 168 घण्टे के सप्ताह में 2 घण्टे वा 8-10 घण्टे हवन कर लेने से समाज का उपकार हो जाता है? कुछ एक स्थानों पर सिलाई मशीन चलाना सिखा देने से समाज उपकार हो जाता है? कम्प्यूटर की नि:शुल्क कक्षा चला देने से हो जाता है समाज का उपकार? नि:शुल्क दवाईयां बाँटने से हो जाती है शारीरिक-आत्मिक व सामाजिक उन्नति?

कुछ तो उन्नति सम्भव है वह भी शतांश में! यह सारा कार्यक्रम तो 1875 में आर्यसमाज के स्थापना से पूर्व भी कई संगठन कर ही रहे थे और आज भी कर ही रहे हैं। फिर ऋषि को क्या पड़ी थी एक और संगठन खड़ा करने की? अच्छे-अच्छे कार्य करने वाले संगठनों की आज भी कमी नहीं है। तब भी कमी नहीं थी। किन्तु हमारे लोगों में जो पतन आ गया था, आर्यों की सन्तान सिद्धान्तों को भूल चुकी थी, उन्हें सिद्धान्त समझाना लक्ष्य था आर्यसमाज का। जब एक बार आर्यों की सन्तान अपने पूर्वजों के सत्य सिद्धान्तों को जान जाएंगे-जना दिये जाएंगे तो प्रश्न ही नहीं उठता है कि आर्य अकर्मण्य बन कर घर में बैठा रहे। घर की पीड़ा, समाज की पीड़ा, राष्ट्र की पीड़ा उसे आन्दोलित करती रहेगी। सिद्धान्तों को ठीक-ठीक जानने के बाद जब युवक-युवती देखता है कि टी.वी. पर बाबाओं की फौज लगी है जो कृष्ण के योगिराज स्वरूप की चर्चा न करके अपनी कामवासना की पूर्ति के लिए कृष्ण को चोर-जार, शिखामणि बताते हैं तो युवक का खून खौल उठता है। सिद्धान्तों को जानने वाला युवक-युवती ज्योतिष के नाम पर फैल रहे पाखण्ड को देखकर शांत बैठ ही नहीं सकता है। सिद्धान्तों को जानने वाला युवक-युवती समझता है कि गरीबी का इलाज वामपंथियों की भांति धन का समाज में समान वितरण नहीं है। गरीब तो अनायास प्राप्त भोजन को खा-पीकर पुन: भूखा प्यासा हो जाएगा। सिद्धान्तों को जानने वाला युवक-युवती एक कदम आगे बढ़कर समझता है कि मात्र रोजगार दे देने से भी समाज में सुख शान्ति नहीं बढ़ने वाली। जब तक व्यक्ति में दोष रूपी छिद्र बंद नहीं होते, अंधविश्वास रूपी प्रतिबंध नहीं होगा, मूर्तिपूजा की मूर्खता बंद नहीं होगी, फलित ज्योतिष की घटिया उपाय (बिना परिश्रम फल प्राप्त करने की कोशिश) जब तक बंद नहीं होगी जब तक कर्मफल का सिद्धान्त स्पष्ट समझ आएगा नहीं, तब तक कोई व्यक्ति वास्तव में समृद्ध हो ही नहीं सकता। धन की तो कोई कमी नहीं थी हजार वर्ष पूर्व इस देश में, जब देश पर मुस्लिम आक्रान्ताओं ने हमला किया। अकूत सत्पत्ति थी मन्दिरों में, लोगों के घरों में। न कोई गरीब था, न निरक्षर। फिर हम गुलामी को मजबूर हुए थे, इसका कारण था उपरोक्त सभी कमियां व मूर्ति पूजा का बोलबाला। आज तक भी इन मूल समस्याओं का ईलाज नहीं कर पाये! कब करेंगे? जब राष्ट्ररूपी यह वृक्ष हरा-भरा नहीं रहेगा तब। टहनियों व पत्तों पर पानी डालने से पेड़ साफ तो होगा लेकिन तात्कालिक रूप से पानी तो पेड़ की जड़ों को चाहिए अन्यथा पेड़ मजबूत न हो सकेगा।

कोई भी आर्यसमाज यह डिमडिम घोष कर नहीं बता सकता कि हमने अपने नगर को अथवा अपने ग्राम को फलित ज्योतिष के आडम्बर से मुक्त करा दिया, कोई आर्यसमाज यह दावा भी नहीं कर सकता कि अमुक ग्राम में अब कोई श्री कृष्ण को बदनाम नहीं करता। अमुक ग्राम में कोई अब कोई शिव के मिथ्या काल्पनिक रूप को नहीं पूजता। एक भी आर्यसमाज ऐसा नहीं मिलेगा जिसने एक भी ग्राम को आर्यग्राम बनायो हो, सिद्धान्तों वाला ग्राम बनाया हो...।

ऐसा भी नहीं है कि ऋषि की सोच सिर्फ काल्पनिक थी, ऐसा संगठन सम्भव नहीं है। 1947 से पूर्व आर्यसमाज ने खूब काम किया भी है। देखो हिन्दुओं की सोई हुई रंगों में गर्म खून का संचार कराया था आर्यसमाजियों ने, हमारे घोर विरोधी कांग्रेसी इतिहासकार सीताभिपट्टारमैया को भी लिखने को मजबूर होना पड़ा है कि "**आजादी की लड़ाई में क्रान्तिकारियों की जमात में 85 प्रतिशत आर्यसमाजी पृष्ठभूमि से हैं**"।

अभी दो-तीन पीढ़ी पीछे ही झांक कर देख लो समाज में मांसाहार को हेय मानते थे, व्यसनों को त्याज्य मानते थे, परस्त्रीगमन को घृणित मानते थे। पर इधर आर्यसमाज स्वयं सिद्धान्तों की पटरी से नीचे उतर गया और मांसाहार, व्सयन व व्यभिचारादि की स्वीकार्यता बढ़ती गई। अब इन्हें अति हेय दृष्टि से नहीं देखा जाता।

जब तक स्थान-स्थान के आर्यसमाज पुन: सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार को ही अपना लक्ष्य नहीं बनाएंगे, जब तक आर्य निर्माण के कार्य को नियमित रूप से नहीं करेंगे, जब तक नवनिर्मित हुए आर्यों का संरक्षण नही करेंगे, उनकी विद्या का विकास नहीं करेंगे, उनको इतना सक्षम न बनावेंगे कि सिद्धान्तों को अपने परिवार के मूल में स्थापित कर देवें तब तक आर्यसमाज भवन व अपने को आर्य कहने का काई औचित्य नहीं रहेगा।

मनुर्भवः

-आचार्य सतीश

जब एक व्यक्ति तर्क व बुद्धिपूर्वक विचार करके परमात्मा की व्यवस्थाओं को समझ जाता है, उसके अनुसार चलने का प्रयास करता है और जीवन को उसी रूप में चलाता है। सभी मूढ़ विचारों व परम्पराओं को छोड़कर अपने आप को श्रेष्ठ तार्किक, मानवतावादी परम्पराओं से जोड़ लेता है, व्यसनों से मुक्त हो जाता है तो ऐसा ही व्यक्ति समाज व राष्ट्र के बारे में ठीक से चिन्तन कर पाता है और ऐसे ही व्यक्ति द्वारा समाज व राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। ऐसे ही व्यक्ति जब समाज का मार्गदर्शन करते हैं तो समाज सही दिशा में आगे बढ़ता है। और इतना ही नहीं ऐसे व्यक्तियों का ही कर्तव्य बनता है कि वे समाज व राष्ट्र के प्रति संवेदनशील हों। अन्यथा तो उपरोक्त सभी गुण होने के पश्चात् भी यदि समाज-राष्ट्र का चिन्तन नहीं करते हैं तो उनके मनुष्यपन में सन्देह रह जाता है। ऐसे ही मनुष्यों के बारे में कहा जा सकता है कि वे वास्तव में मनुष्य है केवल शरीर धारी मनुष्य नहीं हैं। ऐसा बनने का आदेश वेद में है।

हमारा व्यक्तिगत जीवन श्रेष्ठ होते हुए भी यदि हम समाज-राष्ट्र के प्रति संवेदनशील नहीं है तो इससे बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ती है समाज को, राष्ट्र को। व्यक्तिगत रूप से श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करने वाले जब समाज-राष्ट्र का मार्गदर्शन नहीं करते हैं तो अयोग्य लोगों के हाथों में समाज का नेतृत्व चला जाता है और धीरे-धीरे समाज ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है कि वे श्रेष्ठता का जीवन जीने वाले व्यक्ति ही सबसे पहले उसका शिकार होते हैं और अत्याधिक हानि उठाते हैं। वे न तो अपने सिद्धान्तों पर अधिक समय तक चल पाते हैं और न ही फिर अन्यों को चला पाने की योग्यता उनमें रहती है। इसलिए हम सबका कर्तव्य बनता है कि समाज में जो घटित हो रहा है हम उससे अनभिज्ञ न बनें, उससे मुख न मोडें, उससे उदासीन न रहें, अपितु उसके प्रति पूरे सचेत रहें, यदि सकारात्मक हो रहा है, मानवतावादी वैदिक आर्य सिद्धान्तों के अनुरूप है तो उसमें सक्रिय सहयोग करें, उसको प्रोत्साहित करें और आगे बढ़ाने का प्रयास करे और यदि नाकारात्मक है तो उसे कम करने का प्रयास करें, नकारात्मकता को रोकने वाली शक्तियों का सहयोग करें। मान लीजिए यदि विद्या को बढ़ाने के लिए कोई उपक्रम है, कोई संगठन है, कोई कार्य कर रहा है तो उस उपक्रम में अपना सहयोग करें, जो उसे चला रहे हैं उसका सहयोग करें, उन्हें प्रोत्साहित करें। और यदि कहीं अविद्या का प्रचार हो रहा है, मूढ़ मान्यताओं को बढ़ावा दिया जा रहा है तो वहाँ लोगों को सचेत करें सावधान करें और लोगों को समझाने का प्रयास करें। यह न सोचें कि हमारे समझाने से कौन मानता है, अपितु अपने कर्तव्य का पालन करें। अपने कर्तव्य का पालन करेंगे तो एक ओर हमारी सत्य के प्रति दृढ़ता बनी रहेगी तथा दूसरी ओर हमारा प्रयास कभी भी किसी को प्रेरित कर सकता है। यदि प्रयास ही नहीं करेंगे तो जिसके संस्कार प्रेरित होने के है वे कहां से प्रेरणा प्राप्त करेंगे। ठीक इसी प्रकार से राष्ट्र को कमजोर व शक्तिशाली बनाने वाली विभिन्न परिस्थितियों के प्रति हम सचेत रहें, संवेदनशील रहें। जहाँ सहयोग किया जा सके सहयोग करें, जहां नेतृत्व किया जा सके वहाँ नेतृत्व करें, जहां विरोध की आवशयकता हो वहां विरोध में सहयोग करें, उदासीन न रहें, क्रियाशील बनें।

ऐसे व्यक्ति की ही समाज में हमारे ऋषि-मुनियों ने अवधारणा दी है, जो न केवल स्वयं में श्रेष्ठ हो अपितु अन्यों के लिए भी पुरुषार्थरत हो। इस लेख-श्रंखला के अन्त में यही आकांक्षा है कि हम वास्तव में मनुष्य बनें, केवल देहधारी मनुष्य नहीं अपितु मनुष्यता के गुणों से युक्त। अर्थात् **हम तर्कशील हों, बुद्धि व तर्क से परमात्मा व उसकी व्यवस्था को जानें, समझें, उसके अनुसार चलें अर्थात् हम सत्य को जानकर धारण कर आस्तिक बनें, केवल देखा-देखी नहीं। हम हर प्रकार की अंधश्रद्धा से बचें, व्यसन मुक्त हों, भाग्यवाद को छोड़कर पुरुषार्थी बनें, राष्ट्र व समाज के प्रति संवेदनशील हों, सक्रिय हों, निष्क्रिय न हों।** ऐसा मनुष्य बनने का निर्देश वेद का है, ऐसा ही व्यक्ति आर्य होता है, ऐसा ही व्यक्ति मावनतावादी कहलाता है और ऐसा ही हमें होना चाहिए, अतः **मनुर्भवः-** मनुष्य बनो।

एक आह्वान

-आचार्य सतीश

आर्य बनता है विद्या से, विचारों से, वेद के सिद्धान्तों को जानने, समझने व उन्हें धारण करने से। आर्य बनने के लिए आर्यों के सिद्धान्तों को जानना पड़ता है, उनकी शिक्षा लेनी पड़ती है। कभी यह शिक्षा गुरुकुलों में शिक्षा पद्धित के अर्न्तगत सम्मिलित थी तो इसके लिए अलग से प्रयास व पाठ्यक्रम की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। हजारों सालों से वह प्रणाली छिन्न-भिन्न हो गई और आर्य सिद्धान्त शिक्षा के पाठ्यक्रम से निकल गये। इसीलिए आर्य निर्माण के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता पड़ती है।

देश भर के आर्यसमाजों के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, आर्य संस्थाओं में कार्य करने वाले लोगों व अन्य प्रबुद्ध जन जो विद्या अर्थात् आर्य विद्या का महत्व समझते हैं उनको आह्वान है कि यदि वे अपने आर्य समाजों में चाहते हैं कि संख्या बढ़े, तो उसके लिए अपने परिवार व आस-पास के युवाओं को राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय लघु गुरुकुलीय कार्यक्रमों में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें विद्या दिलाएं और आर्य समाज में उन युवाओं का संरक्षण करें, उन्हें आर्य समाज के काम में लगाएं और क्षेत्र में अपने आर्य समाज की प्रतिष्ठा बढ़ाएं क्योंकि जितने अधिक युवक-युवतियां आर्यसमाज से जुडेंगे उतना ही अधिक उस समाज की पहचान व प्रतिष्ठा पूरे समाज में बढ़ेगी। अतः सभी आर्यों से यह निवेदन है कि आर्य निर्माण के चल रहे इस उपक्रम का लाभ उठाएं और अपने-अपने आर्य समाज को सक्षम और आर्यों से परिपूरित करें।

आर्य निर्माण का यह उपक्रम वर्तमान में युवाओं की आर्य विद्या देने का सबसे सरल, संक्षिप्त व प्रभावी उपक्रम है। जितना अधिक संख्या में आर्य निर्माण होगा उतना ही अधिक आर्य समाज का संगठन भी मजबूत होगा। इसी से पूरे समाज को आर्य बनाने में सहायता मिलेगी। अतः अपने-अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक युवाओं-युवतियों को आर्य बनाकर न केवल अपने आर्य समाज को सक्षम बनाएं अपितु आर्य समाज का अधिकारी व कार्यकर्ता होने का कर्तव्य भी पूरा करें। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा पूर्णतः आपके साथ इस कार्य में सहयोग को तैयार है क्योंकि सबकी उन्नति में ही हम सब की उन्नति भी निहित है।

॥ ओ३म्। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्... ॥

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

द्विदिवसीय लघु गुरुकुल

(आर्य प्रशिक्षण सत्र)

स्थान : सांगोपांगवेद विद्यापीठ आर्ष गुरुकुल
टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81

दिनांक 14-15 अप्रैल, 2018

14 अप्रैल शनिवार को प्रात: 8 बजे तक पहुँचे

अयोजक:-आर्यसमाज जौन्ती-टटेसर, दिल्ली-81

कुलदीप आर्य आर्य सुरेन्द्र आर्य सुरेश आर्य इन्द्र सिंह आर्य कुलदीप
9250887367 9213243754 9999645546 9968979178 9911504848

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा, दिल्ली प्रांत

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/पत्रिका पर जाएं।

जीवन का उद्देश्य

जीवन है परमात्मा का अनमोल एक उपहार।
कर जीव ब्रह्म का योग, करो जीवन साकार।

देह इन्द्रियाँ परमात्मा ने दिए मुक्ति के साधन।
सुबह शाम ओंकार का करना चाहिए चिंतन।
संक्षिप्त से व्यापक बनोगे पाकर के निराकार।
जीवन है परमात्मा का अनमोल एक उपहार।
कर जीव ब्रह्म का योग, करो जीवन साकार।

मोक्ष सुख मिलता है अपना अस्तित्व खोकर।
पूरी निष्ठा से संलिप्त यम नियमों में होकर।
श्रेष्ठ कर्मों से त्याग सकोगे ये नाशवान संसार।
जीवन है परमात्मा का अनमोल एक उपहार।
कर जीव ब्रह्म का योग, करो जीवन साकार।

वेद शास्त्र उपनिषद दिखाते हैं मार्ग मुक्ति का
पढ़-सुनकर लाभ उठाओ विद्वानों की उक्ति का।
यथार्थ ज्ञान से पाओगे मानव जन्म मोक्ष हर बार।
जीवन है परमात्मा का अनमोल एक उपहार।
कर जीव ब्रह्म का योग, करो जीवन साकार।

पुरुष महापुरुष बने सदा पाकर वेदों का ज्ञान।
अष्टांग योग अपना कर ही मिलता है भगवान।
सोनू आर्य यत्न करके दु:ख भोगो न बार-बार।
जीवन है परमात्मा का अनमोल एक उपहार।
कर जीव ब्रह्म का योग, करो जीवन साकार।

-सोनू आर्य, हरसौला, कैथल

Rishi Dayanand - His Life And Work -Saroj Arya, Delhi

At Anupashahar, a Brahmin came to Swamiji and present him with a betel-leaf. The an suspecting Swami took the leaf and began to chew it, but it did not take him long to discover that poison had been mixed with it. Without speaking a word to this deceitful Brahmin, he ran to the Ganges, to perform Neoli-karma(an action to bring out substance from stomach by vomiting). Fortunately this was successful and the Swami kept quiet about the affair. But somehow the admirers of Swamiji got clue of this deadly attempt, and they were naturally not so forgiving. Among these was Sayyad Mahmud, the Tehsildar of Anupashahar who sent for the scoundrel and sent him to the lock-up. When Mahmud went to enquire about Swamiji's health, he was self praising for the punishment he had administered to the Brahmin, he was amazed to find Swamiji annoyed.

"Have I done anything to displease you "

"Of course; I have come into the world to relieve people from captivity, not to see them sent into prison. If the wicked do not forsake their wickedness, why should the good their goodness? I cannot be false to my own self."

This was a surprise for Sayyad Mahmud; a more forgiving, tranquil soul he had not come across all his life. The criminal, it is needless to say, was acquitted.

This was only one of the many murderous attempts made on the Swami's life. At Karnvas, Rao Karan Singh, a richman of Barali, a Vaishnavite by creed, who had come to bathe in the Ganges, came to Swamini's cottage accompanied by twelve armed men. He had been deeply aggrieved at Swamiji's criticism of Vaishnavism and had come to teach him a lesson.

"Where shall I sit?" said he in haughty tone.

"Wherever you like."

"I shall sit where you sit."

"I have no objection"; said the Swami, and the latter made room for him on his seat.

"I understand that you denounce the Ganges and Avatars (incarnation of God); take note if you do anything against them in my presence, it will go hard with you."

"What I consider true I shall speak without fear of any person. How can you give credence to it? By the way, what is this mark on your forehead, Rao sahib?"

"It is Shri (Hall mark of Vaishnavites) and those who don't put it on are Chandals".

"Was your father a Vaishnavite?"

"No."

"The inference is clear."At this Rao Sahib got angry, laying his hand on the hilt of his sword he cried, "Hold your tongue, or you will pay a heavy price."

The Swami stood unmoved, while the Rao with blood-red eyes was raining invectives on the inoffensive Sadhu.

"Karan Singh, if you want to fight, this is not the place for it, you had better try your hands against some ruler worth your steel, if you want a discussion, invite your guru, and he will find me ready."

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

आज दिनांक 10/02/18 में 11/02/18 तक 2 दिनों के सत्र में मुझे काफी कुछ सीखने को मिला और मुझे आर्यों के द्वारा मुझे अच्छे काम करने और सभी प्रकार की कुरीरियाँ-बुराईयों को छोड़ने की प्रेरणा मिली और मैंने अपने आचार्य जी से काफी कुछ सीखने को मिला और संकल्प धारण किया कि मैं वेदों के बताए गए मार्ग पर चलूंगा और वेदों की शिक्षा-दिक्षा का पालन करुंगा, राष्ट्र की सेवा के लिए हर समय तत्पर रहूंगा। वेदों की जय हो, राष्ट्र की जय हो।

मैं वेदों से प्रेरणा लेकर आर्य जीवन शैली पर चलूंगा और अपने दूसरे साथियों को भी वेदों के बारे में बताउंगा और आर्य समाज का पालन करुंगा जो आर्य नहीं हैं उनको आर्य बनने के लिए प्रेरित करुंगा।

नाम: रामफल दलाल, आयु: 50 वर्ष, योग्यता : 12वीं, पता: सेक्टर-2, बहादुरगढ़, हरियाणा

सत्र का अनुभव बड़ा महत्वपूर्ण रहा इससे हमारे राष्ट्र निर्माण के बारे में पता चला और आर्यों का पूर्व में हमारे देश में क्या प्रभाव रहा। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है जो वेद है, जो हमें सिखाता है धर्म, कर्तव्य, ईश्वर के बारे में, वेद के बारे में अब तक सुना था लेकिन 24-02-18 से 25-02-18 तक कैम्प में वेद के बारे में थोड़ा बहुत जाना और जानकर यहा तक पहुँचे कि भ्रमित थे- बाईबल, कुरानादि सबका प्रभु अलग-अलग हैं और यहां तक मैं भी मानता था। अब मुझसे अगर कोई पूछेगा तो मुस्लिम व ईसाई आदि को मैं जबाव देने में सक्षम रहूंगा की ये वेद है जो सब कुछ है, वेद और सृष्टि का दोनों का जन्म लगभग समान रहा है। हमें अपने पूर्वजों के आर्दशों को अपनाना चाहिए और अपने राष्ट्र को बचाना चाहिए। आओ हम सब मिलकर फिर से हमारे देश को आर्यावर्त देश कहलाए।

हमारी कोशिश रहेगी की अधिक से अधिक लोगों को जोड़कर आर्य बनाया जाए।

नाम: प्रदीप कुमार त्रिवेदी, आयु: 35 वर्ष, योग्यता: बी.ए., पता: सैक्टर-46डी, चन्डीगढ़ हरियाणा

सुचरित्र निर्माण और जाति-पाति के बन्धनों और अंध विश्वासों को छोड़कर या दूर रहकर शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण करने के लिए आर्य व आर्यावर्त का संकल्प लेकर देश के विकास और संगठन में भागीदारी निर्वाह करने के लिए प्रयत्न करते है। यह लघु आर्य गुरुकुल अभ्यास कक्षा हर देशवासी के लिए जनहितकारी, देश को, संगठन को मजबूत करने और देश को विकासशील राष्ट्र बनाने वाली विचारधारा है।

आर्य के विकास में भागीदारी निभाने के लिए और गुरुकुल के अनुसार भागेदारी।

नाम: बृजमोहन सिंह, आयु: 48 वर्ष, योग्यता: स्नात्कोत्तर, पता: शालीमार बाग, नई दिल्ली

चन्द्रशेखर आजाद बलिदान दिवस, स्वर्ण जयंति पार्क, रोहिणी दिल्ली में 25 फरवरी को आर्यसमाज सै०-15, व निर्मात्री सभा दिल्ली प्रान्त के तत्वाधान में मनाया गया। जिसमें मुख्य अतिथि व वक्ता के रूप में श्रद्धेय आचार्य परमदेव मीमांसक जी रहे।

आर्य प्रचारक कक्षाएं रोहतक व दिल्ली में

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।